'बच्चों के लिए लिखते समय मां की तरह सोचें'

जागरण संवाददाता • लखनऊ : उड़िया विद्वान दाश बेनहुर ने कहा कि बाल साहित्य 18वीं सदी में नहीं शुरू हुआ, लोरी के रूप में मां के मुंह से बाल साहित्य का उदय हुआ। आश्चर्य है कि बाल साहित्य नजरअंदाज होता रहा है। विडंबना है कि प्रथम प्रधानमंत्री साहित्य अकादमी के पहले अध्यक्ष रहे, पर उनके समय में बाल साहित्य पुरस्कार नहीं शुरू हो पाए। बच्चों के लिए लिखते समय मां की तरह सोचना और आगे बढ़ना चाहिए।

साहित्य अकादमी दिल्ली के दो दिवसीय आयोजन के दूसरे दिन हिंदी संस्थान के निराला सभागार में बांग्ला रचनाकार उल्लास मलिक ने बांग्ला बाल साहित्य के लेखन का हवाला देते हुए उसके इतिहास को सामने रखा। स्थानीय साहित्यकार जाकिर अली रजनीश ने कहा कि विज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो बहुत सी बाल कहानियों ने नुकसान

प्रहलाद सिंह झोरड़ा

• साहित्य अकादमी दिल्ली का दो दिवसीय 'लेखक सम्मिलन'

अधिक पहुंचाया है। अनंत कुशवाहा की कहानी इंदरमन साहू की कहानी अधजले पांव, बांध के चूहे व प्यासा पुल, अरशद खान की कहानी पानी पानी रे व गुल्लक के संग अन्य कई उत्कृष्ट कहानियों की चर्चा करते हुए कहा हिन्दी बाल साहित्य अब भी उपदेश और नीति कथाओं के जाल में उलझा हुआ है।

के.श्रीकुमार ने कहा कि मलयाली बाल साहित्य के लिए भविष्य नई चुनौतियों से भरा है। मराठी लेखिका सविता करंजकर, अकादमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा, असमिया लेखक रंजू हाजरिका, अजय कुमार शर्मा, बिशन सिंह दर्दी, गुजराती लेखिका गिरा पिनाकिन भट्ट, कन्नड़ लेखक कृष्णमूर्ति बिलगेरे, हर्षा सद्गुरु शेट्ये, पंजाबी लेखक कुलदीप सिंह, राजस्थानी लेखक प्रहलाद सिंह झोरड़ा, भार्जिन मोसाहारी (बोडो), मुजफ्फर हुसैन दिलबर (कश्मीरी) आदि ने भी लेखकीय अनुभव साझा किए। ने अपने अनुभव साझा किए।

पापा कहते बनो डाक्टर, मां कहती इंजीनियर... : अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक की अध्यक्षता और अजय कुमार शर्मा के संचालन में काव्य समारोह भी हुआ। लता हिरानी ने अपनी गुजराती कविता हिंदी अनुवाद- बात चली है गांव गांव में, चमक चांद पर जाएगी सुनाई। लखनऊ के सुरेंद्र विक्रम ने बाल हिंदी रचना- पापा कहते बनो डाक्टर, मां कहती इंजीनियर... प्रस्तुत की। खोइसनम मंगोल ने दो लघु कविताएं पढ़ीं। तेलुगु रचनाकार वूरीमल्ला सुनंदा व कुमुद शर्मा ने भी रचनाएं पढ़ीं।